Result Mitra Daily Magazine

Isreal ka Hannibal Protocol

हालिया सन्दर्भ –

- इजरायली समाचार पत्र हारेत्ज ने खुलासा किया है कि पिछले वर्ष जब हमास ने दक्षिणी इजरायल पर हमला किया था, तब इजरायली रक्षा बलों (IDF) ने हन्निबल या हैनिबल निर्देश को लागू कर दिया था।
- यह निर्देश IDF द्वारा अधिकतम बल प्रयोग किए जाने का एक साधन है, जिसके तहत यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है कि कोई भी सैनिक दुश्मन द्वारा बंदी न बना लिया जाए, भले ही इस प्रक्रिया में सैन्य एवं नागरिक जीवन का बलिदान ही क्यूँ न करना पड़े।
- हनीबल निर्देश जिसे हनीबल प्रक्रिया का प्रोटोकॉल भी कहा जाता है, का प्रयोग 7 अक्टूबर को (हमास के द्वारा हमले वाले दिन) तीन सैन्य ठिकानों में किया गया था, जहां हमास ने हमला किया था।
- हमास के उस हमले में 1200 से ज्यादा लोग मारे गये थे, तथा 250 को हमलावरों द्वारा बंदी बनाकर गाजा ले जाया गया था।
- जवानी हमले में इजरायल-हमास के बीच हो रहे युद्ध में पिछले 9 महीनों में 38000 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं।

हालिबल निर्देश –

- यह एक प्रक्रिया है, जो कथित रूप से IDF के सैन्य कार्यवाही को प्रदर्शित करता है।
- इसका उद्देश्य किसी एक भी बंदी इजरायली सैनिक के आस-पास के सभी लोगों को तुरंत खत्म कर देना है, भले ही इसमें बंदी सैनिक के जीवन का बलिदान भी हो जाए।
- यह प्रक्रिया राजनीतिक रूप से लंबी एवं जटिल तथा घाटे के कैदी की अदला-बदली के सिद्धांत को रोकता है।
- कथित हैनीबल का सिद्धांत पूर्णतः प्रकाशित नहीं हुआ, लेकिन इसमें कहा जाता है कि 'बंदी बनाए जाने की स्थिति में मुख्य मिशन सैनिक को बंदी बनाने वालों से बचाना है, भले ही यह सैनिक की जान अथवा घायल होने की कीमत पर ही हो।'

नामकरण –

- इजरायली अधिकारियों के अनुसार यह नामकरण किसी विशेष कारण से नहीं हुआ है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि इस प्रक्रिया का नाम कार्थेजियन जनरल हैनिबल के नाम पर हुआ है, जिसे लगभग 181 BC में रोमनों द्वारा पकड़े जाने की संभावना को देखते हुए खुद को मारने का निर्णय लिया था।
- हैनिबल, वर्तमान ट्यूनीशिया के कार्थेज सेना का जनरल था, जिसने अनोतोलिया में बिथानिया के राजा प्रूसियास प्रथम के यहां शरण ली थी।
- रोमनों ने प्रूसियास से हैनिबल को सौंपने के लिए मजबूर किया।

- जब हैनिबल को विश्वास हो गया कि अब वह बंदी बनाए जाने से नहीं बच पाएगा तो उसने स्वयं को जहर खाकर मार लिया।

इजरायल द्वारा अपनाया जाना –

- इस सिद्धांत को 1985 के जिब्रील समझौते के जवाब में इजरायल द्वारा तैयार किया गया था।
- जिब्रील समझौते में इजरायल को 3 बंदियों के बदले 1,150 फिलीस्तीनी कैदियों को छोड़ना पड़ा था।
- इजरायल के तीन नागरिकों को सीरिया सहित स्थित उग्रवादी समूह 'पॉपुलर फ्रंट फॉर द लिबरेशन ऑफ फिलीस्तीन द्वारा लेबनान में पकड़ा गया था।
- बंदियों के अदला-बदली का कार्य 1 वर्ष तक चला था, जिसका नाम उग्रवादी समूह के नेता अहमद जिब्रील के नाम पर रखा गया था।
- इजरायल द्वारा छोड़े गये कैदियों में शेख अहमद यासीन भी शामिल था, जिसने 1987 में हमास की स्थापना की थी।
- इस प्रकार की अदला बदली इसराइल दोहराना नहीं चाहता था इसलिए यह सिद्धांत अपनाया गया।
- 1986 में जब हिज्बुल्लाह ने दक्षिणी लेबनान में इजरायली सैनिकों को बंदी बनाने का प्रयास किया तो IDF के उत्तरी कमांड प्रमुख योसी पेलेड ने इसी प्रक्रिया के तहत ऑपरेशन का आर्डर दिया था।

Result Mitra

सेंसरशिप –

- 2003 में जब इस प्रक्रिया के संबंध में अखबार द्वारा खुलासा किया जाने लगा तो इजरायल सैन्य सेंसरशिप ने इस संबंध में किसी भी प्रकाशन पर रोक लगा दी थी।
- इजरायल में इस सिद्धांत का विरोध नहीं किया जाता है, क्योंकि उनका मानना है कि एक बंदी के रूप में सैनिक को उचित सम्मान नहीं मिलेगा।
- कानून विशेषज्ञ इसकी आलोचना इस संदर्भ में करते हैं कि इसमें मानव जीवन की उपेक्षा की जाती है।

Result Mitra